अध्याय - 1

अंतराष्ट्रीय अर्थशास्त्र का परिचय

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार :- जब व्यापार देश की सीमाओं को लाघ जाता है, तो उसे अंतराष्ट्रीय व्यापार कहते है।

अंतराष्ट्रीय अर्थशास्त्र :- जब दो देश आपस मे व्यापार करते है तो उनमे आर्थिक सबंधों की शुरूआत होती है, इसके कारण कुछ आर्थिक समस्याएँ भी पैदा होती है। इसलिए अंतराष्ट्रीय अर्थशास्त्र मे इन्ही आर्थिक सबंधो एवं उनसे उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

श्रम विभाजन :- आज बढते हुए श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण ने प्रत्येक देश को किसी विशेष वस्तु के उत्पादन मे निपुणता प्रदान की है। यह इसलिए सम्भव हुआ है कि अब विभिन्न देशो के बढते हुए आर्थिक सबधों ने अंतराष्ट्रीय व्यापार को एक नई दिशा दी है।
विशिष्टीकरण के फलस्वरूप बढे हुए उत्पादन का उपभोग उत्पादक स्वय नही करता बल्कि उनका विनिमय करके ऐसी वस्तुएँ प्राप्त कर लेता है जिसके उत्पादन मे वह निपुण नहीं या उत्पादन की लागत ज्यादा आती है।

- वाणिकवादी अर्थशास्त्री देश की प्रगति के लिए केवल निर्यात के पक्ष में थे।
- प्रकृतिवादियों ने वाणिकवादियों का इस संबंध में विरोध किया।

आंतरिक व्यापार :- यह व्यापार एक देश के अंदर होता है।

आंतरिक तथा अंतराष्ट्रीय व्यापार की तुलना / समानता

I विशिष्टीकरण
II लागत
III विनिमय
IV लाभ
V पारस्परिक संयोग
VI उपभोक्ता की प्रभुता

आंतरिक और अंतराष्ट्रीय व्यापार में अंतर

I उत्पादन में साधनों की गतिहीनता
II उत्पादन परिस्थितयों में भिन्नता
III भिन्न मुद्राएं
IV बाजार की परिस्थितयाँ
V प्राकृतिक संसाधनों में भिन्नता
VI आयात और निर्यात पर प्रतिबंध
VII वस्तुओं की गतिहीनता
VIII अंतराष्ट्रीय राष्ट्रवाद
IX आर्थिक राष्ट्रवाद
X भाषाएं एवं परम्पराओं में भिन्नताएँ / रीति रिवाजों में भिन्नताएं।

पृथक सिद्धांत के विपक्ष मे तर्क

I उत्पादन के साधनो मे गतिहीनता
II तुलनात्मक लागत
III मुद्राओ मे असमानता
IV उत्पादन की परिस्थितयाँ
V प्राकृतिक संसाधन तथा भौगोलिक परिस्थितयाँ
VI आयात और निर्यात पर प्रतिबंध

अंतराष्ट्रीय व्यापार और अंतराष्ट्रीय विशिष्टीकरण के लाभ

I प्राकृतिक साधनों का पूरा उपयोग
II सस्ती वस्तुएं
III प्राकृतिक संकटों का मुकाबला करने की शक्ति
IV विभिन्न प्रकार की वस्तुएं
V अतिरिक्त उत्पादन
VI प्रतियोगिता
VII विस्तृत बाजार
VIII एकाधिकारी प्रवृति का अंत
IX कच्चे माल की उपलब्धता
X विशिष्टीकरण
XI आर्थिक विकास की संभावना
XII उत्पादन की तकनीको मे सुधार
XIII राष्ट्रीय आय मे वृद्धि
XIV अंतराष्ट्रीय सहयोग
XV विभिन्न वर्गो को लाभ
XVI अधिक रोजगार
XVII सांस्कृतिक संबंध

Date / /
Page No.

अंतराष्ट्रीय व्यापार की हानियाँ

I प्राकृतिक ससांधनों की समाप्ति
II राजनीतिक दासता
III विदेशी प्रतियोगिता
IV राशिपतन
V अंतराष्ट्रीय द्वेष
VI कीमतों में वृद्धि
VII हानिकारक आयात
VIII निर्भरता
IX असंतुलित विकास
X अधिक बुराइयों का प्रभाव
XI कृषि प्रधान देशों को हानि
XII विशिष्टीकरण : एक बुराई
XIII अल्पविकसित देशों के लिए हानिकारक
XIV अति उत्पादन

Date / /
Page No.

अध्याय - 2

अंतराष्ट्रीय व्यापार का परंपरावादी सिद्धांत

परंपरावादी विचारधारा
↓
अंतराष्ट्रीय व्यापार का परंपरावादी सिद्धांत
↓
Adam Smith
Ricardo

आधुनिक विचारधारा
↓
अंतराष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धांत
↓
Heckscher
Ohlin

परंपरावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार लागत में अंतर ही अ॰ व्यापार का आधार है।

लागत में अंतर

- लागत में निरपेक्ष अंतर
- लागत में तुलनात्मक अंतर
- लागत में समान अंतर

1. **लागत में निरपेक्ष अंतर** :- लागतों में निरपेक्ष अंतर उस समय पाया जाता है जब कोई एक देश किसी वस्तु को दूसरे देश की तुलना में काफी कम लागत पर उत्पन्न कर लेता है तथा दूसरा देश किसी अन्य वस्तु को

पहले देश की तुलना में काफी कम लागत पर उत्पन्न कर लेता है।

देश A B

वस्तु x (10Rs.) x (20Rs.)

y (20Rs.) y (10Rs.)

मान्यताएँ :- I हम मानते हैं कि किसी अर्थव्यवस्था में केवल 2 वस्तुओं का उत्पादन हो रहा है।

II केवल 2 देशों के भीतर व्यापार की चर्चा की गई है।

III श्रम ही उत्पादन का एकमात्र साधन है।

देश (A, B)	व्यापार से पहले का उत्पादन		व्यापार के बाद का उत्पादन		व्यापार से लाभ	
वस्तु →	x	y	x	y	x	y
A	10	20	0	40	-10	+20
B	20	10	40	0	+20	-10
Total	30	30	40	40	+10	+10

- तालिका से स्पष्ट है कि देश A में श्रम की एक इकाई द्वारा एक दिन में 10 इकाईयाँ x और 20 इकाईयाँ y का उत्पादन किया जाता है।
- जबकि देश B में श्रम की 1 इकाई द्वारा एक दिन में 20 इकाईयाँ x और 10 इकाई y का उत्पादन किया जाता है।
- उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि देश A को y वस्तु का उत्पादन में तथा B को x वस्तु के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ है।

Diagram.

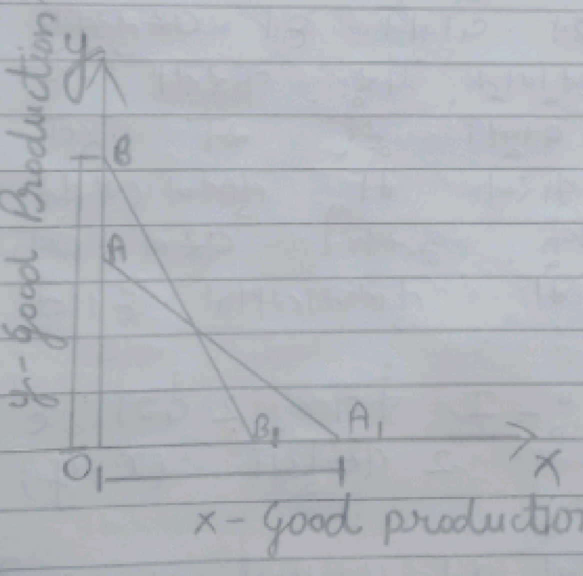

- A देश x वस्तु ज्यादा बना रहा है तथा वह इसमें निपुण है।
- B देश y वस्तु ज्यादा बना रहा है तथा वह इसमें निपुण है।

2. लागतों में तुलनात्मक /सापेक्ष अंतर :- Ricardo के अनुसार अं० व्यापार लागतों में तुलनात्मक अंतर के कारण होता है। लागतों के तुलनात्मक अंतर से अभिप्राय यह है कि एक देश दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन दूसरे देश की तुलना में कम लागत पर करता है, परन्तु उसे दोनों में से एक का उत्पादन करने में तुलनात्मक लाभ अधिक है। जबकि दूसरी वस्तु के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ कम है।

दूसरा देश दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन अधिक लागत पर करता है, परंतु उसकी दोनों में से एक वस्तु का उत्पादन करने में तुलनात्मक हानि कम है जबकि दूसरी वस्तु का उत्पादन करने में तुलनात्मक हानि अधिक है।

मान्यताएँ :- I केवल 2 देश है और वो 2 वस्तुओं (x, y) का उत्पादन करते है।

II श्रम उत्पादन का एकमात्र साधन है।

III श्रम की सभी इकाईयां एक समान है।

IV उत्पादन पर समान प्रतिफल का नियम लागू हो रहा है।

V उत्पादन के साधन देश के अंदर गतिशील परतु 2 देशों के बीच गतिहीन है।

VI यातायात की कोई लागत नहीं है।

VII अं० व्यापार सभी सरकारी नियंत्रण से मुक्त है।

VIII सभी देशों में पूर्ण रोजगार है।

IX व्यापार संतुलित है। (Import = Exports)

देश	X की एक इकाई के उत्पादन में श्रम की इकाईयां	y की एक इकाई के उत्पादन में श्रम की इकाईयां	वस्तु x और y के बीच विनिमय अनुपात
A	100	120 तुलनात्मक हानि कम	1 unit of x = $\frac{120}{100}$ = 1.2 unit of y
B	90	80 तुलनात्मक लाभ अधिक	1 unit of x = $\frac{90}{80}$ = 0.89 unit of y

Diagram

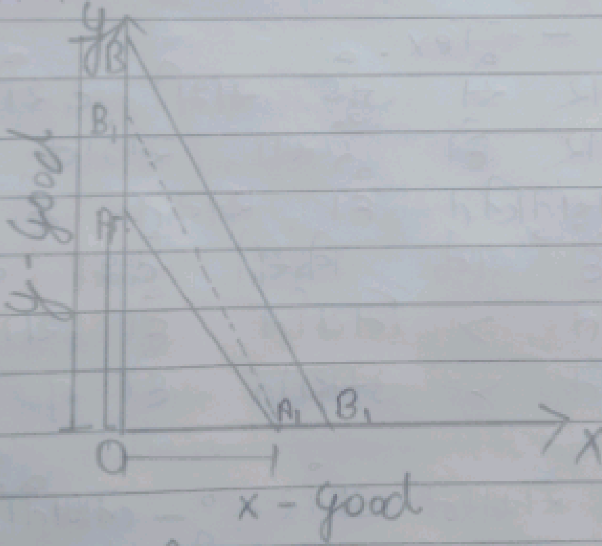

Production Same

Date
Page No.

आलोचनाएं :- I केवल दो देश नहीं होते और वे दो से ज्यादा वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

II श्रम एकमात्र साधन नहीं है।

III श्रम की सभी इकाईयां एक समान नहीं होती।

IV उत्पादन पर समान प्रतिफल का नियम हमेशा लागू नहीं होता।

V उत्पादन के साधन एक देश के अंदर भी गतिहीन हो सकते हैं और दो देशों के बीच गतिशील भी हो सकते हैं।

VI यातायात की लागत 0 नहीं होती। दो वस्तुओं के व्यापार में चाहे व अं० हो या आंतरिक परंतु लागत तो होगी ही।

VII अं० व्यापार पर सरकारी नियंत्रण होता है। जैसे - Tex.

VIII अं० व्यापार से जुड़े सभी देशों में पूर्ण रोजगार हो ऐसा सम्भव नहीं है।

IX व्यापार असंतुलित हो सकता है ऐसा सम्भव है कि किसी देश के
आयात > निर्यात हो या
निर्यात > आयात हो।

3. **लागत में समान अंतर :-** लागतों में समान अंतर उस समय कहा जाता है जब दोनों देशों में दो वस्तुओं के उत्पादन अनुपात एक समान होता है। ऐसी स्थिति में अं० व्यापार नहीं होगा क्योंकि इससे किसी भी देश को लाभ नहीं होगा।

देश	वस्तु x	वस्तु y
A	3	6
B	4	8

Diagram

1 unit of $x = \frac{3}{6} = 2$ unit of y

1 unit of $x = \frac{4}{8} = 2$ unit of y.

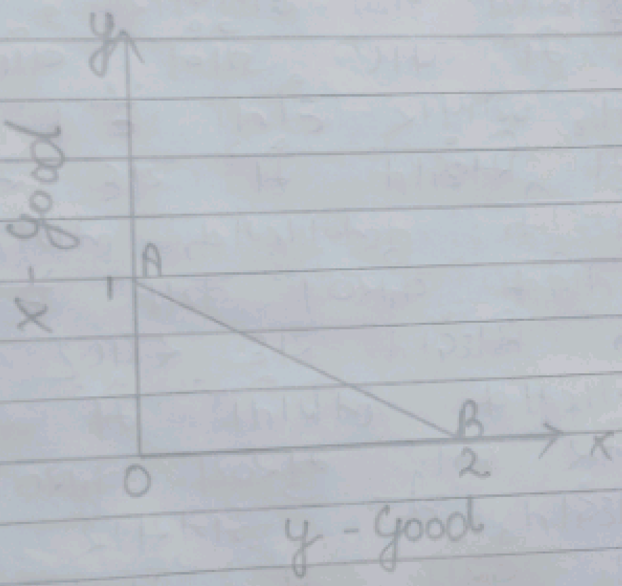

Date / /
Page No.

अध्याय - 3

अंतराष्ट्रीय व्यापार का हैक्शर-ओहलिन सिद्धांत

यह सिद्धांत अं. व्यापार के तुलनात्मक लागत सिद्धांत का खंडन नहीं करता बल्कि उसका समर्थन करता है। तुलनात्मक लागत सिद्धांत के अनुसार, तुलनात्मक लागतो में पाए जाने वाले अंतर के कारण अं. व्यापार होता है।
परंतु इस सिद्धांत में यह स्पष्ट नहीं होता है कि तुलनात्मक लागत में अंतर का वास्तविक कारण क्या है?
आधुनिक सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि तुलनात्मक लागतों में पाए जाने वाले अंतर का मुख्य कारण क्या है? इस सिद्धांत के अनुसार संसार के विभिन्न देशो मे साधन सम्पन्नता मे भिन्नता पाई जाती है। साधन संपन्नता से अभिप्राय एक देश मे उपलब्ध उत्पादन के साधनों की मात्रा से है। उदाहरण के लिए, कुछ देशों मे श्रम की मात्रा अधिक होती है। साधन सपन्नता की विभिन्नता के करण साधनो की कीमत मे अंतर पाया जाता है। साधनो की कीमतो में अंतर ही तुलनात्मक लागतों मे अंतर का कारण बनता है।

मान्यताएँ :- I यह सिद्धांत दो देशों (भारत, जर्मनी)
दो वस्तुओं (घड़ियाँ, कमीज)
दो उत्पादन के साधन (श्रम, पूँजी)
से सबंधित है।
इसलिए इसे $2 \times 2 \times 2$ मॉडल भी कहते हैं।

II एक देश के अंदर साधन गतिशील है परंतु दो देशों के बीच गतिहीन है।

III सभी बाजारों में पूर्ण प्रतियोगिता है।

IV व्यापार स्वतंत्र होता है।

V विभिन्न देशों की रूचियाँ समान हैं।

VI उत्पादन की समान तकनीक का उपयोग किया जाता है।

VII यातायात की कोई लागत नहीं है।

VIII विभिन्न देशों मे साधन संपन्नताएँ अलग-2 है

IX वस्तुओं को उनकी साधन प्रधानता के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
जैसे - पूंजी प्रधान वस्तुएं।
श्रम प्रधान वस्तुएँ।

X दोनों देशों मे एक वस्तु के उत्पादन का उत्पादन फलन एक ही है।

$$Q = f(L, K)$$

श्रम-प्रधान वस्तुएँ :- वे वस्तुएं होती है जिनके उत्पादन में श्रम का अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है

पूँजी-प्रधान वस्तुएं :- वे वस्तुएं होती हैं जिनके उत्पादन में पूंजी का अधिक मात्रा मे प्रयोग किया जाता है।

1 कीमत का मापदण्ड :- जिस देश में पूँजी सस्ती है तथा श्रम महँगा है, उसे पूँजी संपन्न देश कहा जाएगा।
जिस देश मे श्रम सस्ता है तथा पूँजी महँगी है उसे श्रम संपन्न देश कहा जाएगा।

जर्मनी भारत

$$\left(\frac{P_K}{P_L}\right) < \left(\frac{P_K}{P_L}\right)$$

P_K - Price of Capital
P_L - Price of Labour.

Diagram.

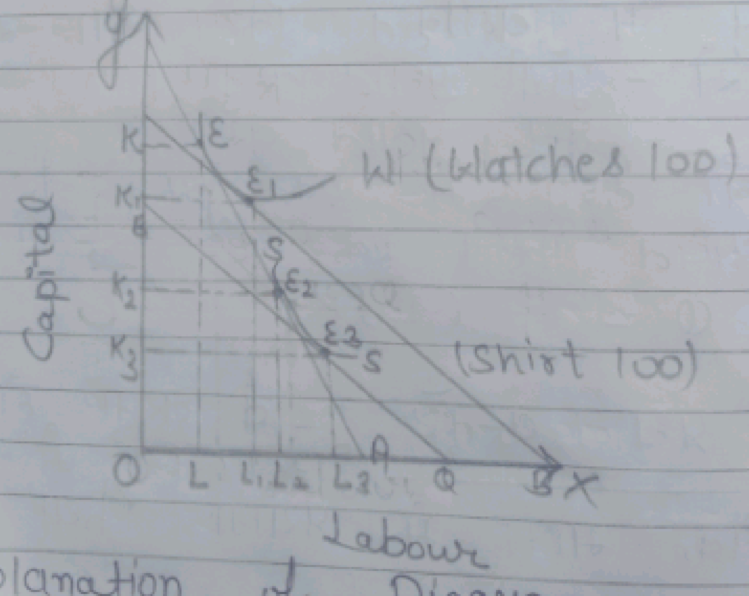

Explanation of Diagram

- A-A देश A की-सम लागत रेखा है।
- B-B देश B की ----------।

- W-W वक्र पर हर बिंदु श्रम और पूंजी के विभिन्न संयोगों को दर्शाता है। जिनका उपयोग करके देश A और देश B 100 घड़ियों का उत्पादन कर सकते है।
- W-W देश A की सम-लागत रेखा को बिंदु E पर स्पर्श करता है जबकि देश B की सम लागत रेखा को E_1 पर स्पर्श करता है। इसका अर्थ है कि देश A को 100 watches के उत्पादन के लिए OK पूंजी + OL श्रम चाहिए। जबकि देश B को 100 watches के उत्पादन के लिए OK_1 पूंजी + OL_1 श्रम चाहिए।
- B_1B_1 जोकि B-B के समानांतर है, B की सम लागत रेखा को दर्शाती है। ($B_1B_1 \parallel BB$)
- SS 100 shirts के उत्पादन के लिए देश A और देश B का सम-उत्पत्ति वक्र है।
- SS देश A की सम-लागत रेखा AA को E_2 पर स्पर्श करती है जिसका अर्थ है कि देश A को 100 Shirts बनाने मे OK_2 पूंजी + OL_2 श्रम चाहिए।
- SS देश B की सम-लागत रेखा B_1B_1 को E_3 पर स्पर्श करता है जिसका अर्थ है कि देश B 100 Shirts बनाने के लिए OK_3 पूंजी + OL_3 श्रम चाहिए।

→ घड़ियाँ पूँजी प्रधान वस्तुए है क्योंकि घड़ियों के उत्पादन मे दोनो ही देशो मे अधिक मात्रा मे पूँजी लगती है। जबकि कमीजे श्रम-प्रधान वस्तुऐ है क्योंकि इनके उत्पादन मे दोनो ही देशो मे अधिक मात्रा मे श्रम का उपयोग किया जाता है।

→ इसलिए देश A (पूँजी सम्पन्न देश) को Watches (पूँजी सम्पन्न वस्तुऐ) का उत्पादन करना चाहिए और देश A को देश B को Watches का निर्यात करना चाहिए।

→ देश B (श्रम उत्पादन देश) को Shirts (श्रम सम्पन्न वस्तुए) का उत्पादन करना चाहिए और B द्वारा A को कमीजो का निर्यात करना चाहिए।

2 भौतिक मापदण्ड :- भौतिक मापदण्ड से अभिप्राय यह है कि यदि किसी देश मे दूसरे देश की तुलना मे पूंजी का अनुपात श्रम से अधिक है तो उसे पूंजी संपन्न देश कहा जाएगा। इसी प्रकार जिस देश में दूसरे देश की तुलना मे श्रम का अनुपात पूंजी से अधिक है तो उसे श्रम संपन्न देश कहा जाएगा।

देश A देश B

$$\left(\frac{K_A}{L_A}\right) > \left(\frac{K_B}{L_B}\right)$$

Date / /

Page No.

Diagram :-

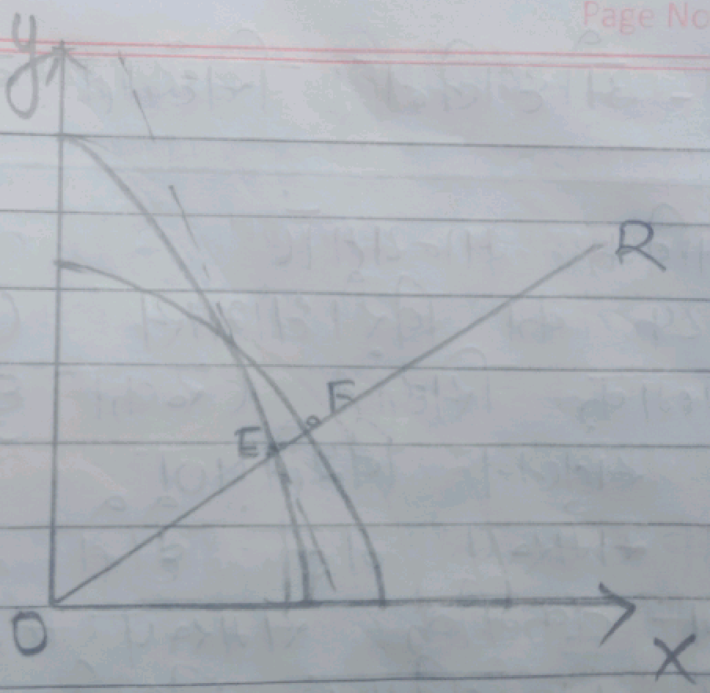

Date / /
Page No.

हैक्शर - ओह्लिन सिद्धांत की आलोचनाएँ

अवास्तविक मान्यताएँ

I लियोन्टिफ का विरोधाभास (V. Imp)
II अगत्यात्मक सिद्धांत (रूका हुआ)
III आंशिक संतुलन विश्लेषण
IV साधन समरूप नहीं होते
V उत्पादन तकनीक समरूप नहीं होती
VI वस्तुओं का कीमत निर्धारण का असंगत तर्क
VII रुचि स्थिर नहीं रहती
VIII सीमित व्याख्या
IX परस्पर विरोधी निष्कर्ष
X

अध्याय - 4

व्यापार की शर्तें तथा पारस्परिक माँग का सिद्धांत

अर्थ :- व्यापार की शर्तों से अभिप्राय उस दर से है जिस पर एक देश की वस्तुओं को दूसरे देश की वस्तुओं के साथ विनिमय किया जाता है।

$$\text{Terms of Trade} = \frac{\text{Index of Export Prices}}{\text{Index of Import Prices}} \times 100$$

व्यापार की शर्तें

I शुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें :- एक निश्चित समय में किसी पहले समय की तुलना में निर्यात तथा आयात की कीमतों के अनुपात को शुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें कहा जाता है।

$$T_c = \frac{P_X}{P_M}$$

T_c : Terms of Trade
P_X : Index of Export Prices
P_M : Index of Import Prices

आलोचना - Page - 49.

II सकल वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें :- एक निश्चित समय में किसी पहले समय की तुलना में आयात तथा निर्यात की मात्राओं के अनुपात को सकल वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें कहा जाता है।

$$T_Q = \frac{Q_M}{Q_X}$$

T_Q : सकल वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें
Q_M : आयात की मात्रा
Q_X : निर्यात - - - -

Example - 49
आलोचना - 50

III आय व्यापार शर्तें :- यह धारणा वास्तव में शुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार के सिद्धांत का एक सुधरा रूप है। इस धारणा के अनुसार, शुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार शर्तों को निर्यात की मात्रा सूचकांक से गुणा करके आय व्यापार शर्तों का अनुमान लगाया जा सकता है। आय व्यापार शर्तों को आयात की क्षमता भी कहा जाता है।
इसका कारण यह है कि दीर्घकाल में किसी देश के कुल निर्यात का मूल्य उसके कुल आयात के मूल्य के बराबर होता है।

$$Q_m \times P_m = Q_x \times P_x$$

$$Q_m = \frac{Q_x \times P_x}{P_m}$$

$Q_m = TI$ (Income Terms of Trade)

IV एकल साधनात्मक व्यापार शर्तें :- वस्तु व्यापार शर्तों में उत्पादन के साधनों की उत्पादकता की अवहेलना की गई है। एकल-साधनात्मक व्यापार शर्तें शुद्ध वस्तु विनिमय व्यापार शर्तों को निर्यात उत्पादकता सूचकांक से गुणा करके प्राप्त किया जा सकता है।

$$T_c \times F_x$$

$$\frac{P_x}{P_M} \times F_x$$

V द्वि-साधनात्मक व्यापार शर्तें :- द्वि-साधनात्मक व्यापार शर्तों की धारणा के अनुसार व्यापार की शर्तों का अनुमान लगाने के लिए देश के निर्यातों को उत्पन्न करने वाले साधनों की उत्पादकता के साथ-2 जिस देश से आयात किए जाते हैं। वहाँ इन वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले साधनों की उत्पादकता को भी ध्यान में रखा जाता है।

एक साधनात्मक व्यापार शर्तों में निर्यात वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले साधनों की उत्पादकता को ध्यान में रखा जाता है परंतु आयात की जाने वाली वस्तुओं को उत्पादन करने वाले साधनों की उत्पादकता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता।

$$\frac{T_c \times F_x}{F_m}$$

VI वास्तविक लागत व्यापार शर्तें :- वास्तविक लागत व्यापार शर्तों के आयात तथा निर्यात वस्तुओ की उनकी उपयोगिता के अनुसार तुलना की जाती है। आयात तथा निर्यात दोनों ही वास्तविक लागत निकाल ली जाती है।
निर्यात की वास्तविक लागत उपयोगिता का त्याग है तथा आयात की वास्तविक लागत उपयोगिता की प्राप्ति है। इन दोनो का अंतर अं० व्यापार का सूचकांक है।

$$T_R = T_S \times R_X$$

VII उपयोगिता व्यापार शर्तें :- उपयोगिता व्यापार शर्तें वास्तविक लागत व्यापार शर्तों का एक सुधरा हुआ रूप है। उपयोगिता तथा निर्यात से प्राप्त अनुपयोगिता का सूचकांक है।

$$T_U = T_R \times U$$

पारस्परिक माँग का सिद्धांत

पारस्परिक माँग का सिद्धांत Prof. J.S Mill ने सन् 1848 मे अपनी पुस्तक 'Principles of Political Economy' मे दिया था।
J.S Mill के पारस्परिक माँग के सिद्धात को व्यक्त करने के लिए मार्शल तथा एजवर्थ ने प्रस्ताव वक्र

तकनीक (Offer Curve Technique) को विकसित किया।

<u>पारस्परिक माँग</u> :- पारस्परिक माँग से अभिप्राय, अपने पदार्थों के लिए दूसरे देश के पदार्थों का व्यापार करने के लिए दो देशो की सापेक्ष शक्ति तथा माँग की लोच से है।

<u>प्रस्ताव वक्र</u> :- प्रस्ताव वक्र यह प्रकट करता है कि व्यापार की शर्तें किस प्रकार माँग और पूर्ति की अंतर क्रिया द्वारा निर्धारित होती है।

<u>मान्यताएँ</u> :- यह सिद्धांत दो देशो तथा दो वस्तुओ पर लागू होता है

- दोनो देशो मे पूर्ण रोजगार है।
- पूर्ण प्रतियोगिता है।
- विदेशी व्यापार स्वतंत्र है।
- साधनो मे स्वतंत्र गतिशीलता है।
- तुलनात्मक लागत का सिद्धात लागू होता है

<u>प्रस्ताव वक्र</u> :- प्रस्ताव वक्र वह है जो किसी एक देश द्वारा किसी एक वस्तु की निश्चित मात्राओ के लिए दूसरे देश की वस्तु की दी जाने वाले अनु मात्राओ को प्रकट करता है जिन्हे देने का वह प्रस्ताव करता है।

→

Date / /
Page No.

Table of India

चावल (निर्यात योग्य वस्तु)	गेहूं (आयात योग्य वस्तु)	व्यापार की शर्तें
50	10	5 : 1 $\frac{50}{10}$ $\frac{5}{1}$
80	20	4 : 1
120	40	3 : 1
150	75	2 : 1
200	200	1 : 1

अध्याय - 5

व्यापार विकास का एक इंजन

व्यापार के आर्थिक विकास पर लाभदायक प्रभाव

I व्यापार के दुश्चक्र को तोड़ने में सहायता करता है :-

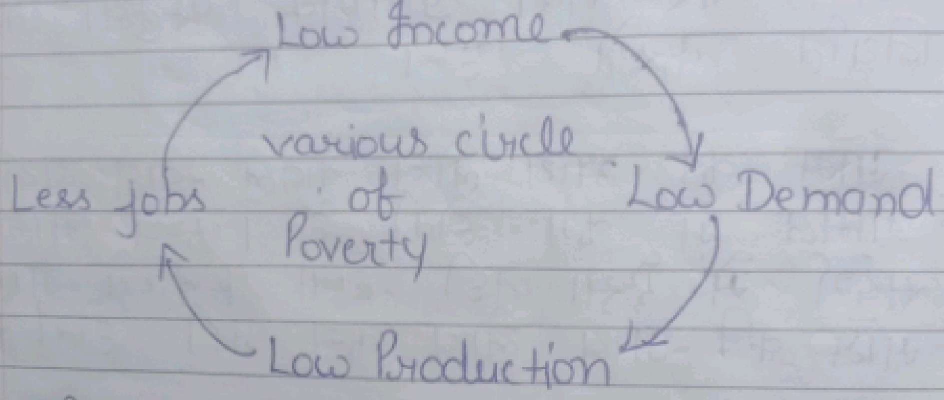

II निवेश की प्रेरणा
III बाजार के आकार में विस्तार
IV तकनीकी प्रगति
V उत्पादन के साधनों का कुशल उपयोग
VI पूंजीगत वस्तुओं का आयात तथा प्राथमिक वस्तुओं का निर्यात
VII महत्वपूर्ण शैक्षणिक प्रभाव
VIII विदेशी पूंजी के आयात का आधार
IX स्वस्थ प्रतियोगिता
X तुलनात्मक लाभ
XI मुद्रा-स्फीति को रोकने में सहायक
XII प्राकृतिक विपत्ति का सामना करने में सहायक
XIII रोजगार के अवसरों का सृजन
XIV औद्योगिकरण को प्रोत्साहन

Date / /
Page No.

आलोचनाएँ :-

I कुछ आलोचकों का कहना है कि ना तो सभी विकासशील देश प्राथमिक वस्तुओं का निर्यात करते हैं और न ही सभी विकासित देश निर्मित वस्तुओ का निर्यात करते हैं।
उदाहरण के लिए- भारत जो कि विकासशील देश है कई निर्मित वस्तुओं का नियति करता है और आस्ट्रेलिया, अमेरिका जैसे कई देश प्राथमिक वस्तुओं का निर्यात करते हैं।

II मॉग की आय लोच केवल खाद्य पदार्थों के मामले मे कम होती है। कच्चे माल के सदंर्भ मे ऐसा नहीं होता। कच्चे माल की मॉग की आय लोच कम नहीं होती।

III यह सेवाओं के व्यापार पर ध्यान नहीं देती।

IV प्रेबिश और सिंगर द्वारा बताया गया कि व्यापार चक्र और व्यापार की शर्तों के बीच का संबंध अनुभव के आधार पर साबित नहीं किया जाता।

अध्याय - 6

व्यापार की शर्तों में परिकालिक प्रतिकूलता (परेबिश - सिंगर परिकल्पना)

व्यापार की शर्तों के चिरकालिक प्रतिकूल रहने की परिकल्पना सिंगर ने सन 1948-49 में की थी और उसके बाद परेबिश ने इसका विस्तार किया। उस समय में इस सिद्धांत ने आयात -प्रतिस्थापन औद्योगीकरण जैसी नीतियों के लिए एक बड़े आधार के रूप में काम किया।

अर्थ :- इस सिद्धांत का अर्थ है कि अं० व्यापार से प्राथमिक उत्पादों / वस्तुओं का निर्यात करने वाले देशों को लाभ होता है। इसका अर्थ है अं० व्यापार से होने वाले लाभ दोनों देशों के बीच में आसान रूप से वितृत होते हैं।

सिद्धांत की व्याख्या :- I प्राथमिक वस्तुओं की तुलना में निर्मित वस्तुओं की माँग की आय लोच अधिक होती है। इसलिए जब आय बढ़ती है तब प्राथमिक वस्तुओं की माँग अधिक बढ़ती है इसलिए व्यापार की शर्तें विकासशील देशों के प्रतिकूल और विकसित देशों के पक्ष में होती है।

II आजकल विकसित देशों में कच्चे माल को प्रतिस्थापित करने वाली तकनीकी को ~~प्रतिस्थापित~~ विकासशील देशों के निर्यातों

Date / /
Page No.

के विरुद्ध माँग संबंधी एक भेदभाव पैदा किया, जिसके कारण विकासशील देशों की व्यापार की शर्तें उनके प्रतिकूल हो गई है।

III विकसित देशों में श्रमिकों को उच्च मजदूरी प्राप्त होती है क्योंकि वहाँ मजदूर संघ अधिक शक्तिशाली होते हैं। इसके विपरीत, विकासशील देशों में मजदूरी दर कम होती है। इसकारण उत्तर में बनी हुई वस्तुएँ दक्षिण में बनी हुई वस्तुओं की तुलना में अधिक महँगी होती हैं। हम कह सकते हैं कि व्यापार से लाभ विकासशील देशों से विकसित देशों को स्थानांतरित हुए हैं।

IV देश में प्रगति के समय मजदूरी दर लाभ एवं कीमतों में प्रगति होती है और मंदी के दौरान इन चरों में गिरावट देखने को मिलती है। विकसित देशों में पूंजीपतियों की एकाधिकार शक्ति के कारण मजदूरी दर और लाभ मंदी के समय कम नहीं पाते। समायोजन के लिए दक्षिण के कच्चे माल की कीमतों में कमी आ जाती है। इस कारण व्यापार की शर्तें विकासशील देशों के प्रतिकूल और विकसित देशों के अनुकूल हो जाती है।

व्यापार के आर्थिक विकास पर हानिकारक प्रभाव

I असंतुलित विकास (Border sided developing but other Countries in the situation of loss)
II लाभ की सीमित संभावना
III विदेशी पूंजी का प्रतिकूल प्रभाव
IV निवेश पर प्रदर्शनकारी प्रभाव का हानिकारक प्रभाव

$$Y = C + I$$

Income = Consumption + Invest

V व्यापार की शर्तो मे दीर्घकालीन ह्रास
VI साधन कीमतो मे समानता न होना

अध्याय - 7

भुगतान शेष
Balance of Payment (BoP)

भुगतान शेष :- एक देश का भुगतान शेष उस देश के निवासियों तथा विदेशीयों में किए गए सभी आर्थिक सौदों का क्रमबद्ध लेखा है।

भुगतान शेष के अंग

- चालु खाता Current A/C
- पूँजी खाता Capital A/C
- Overall Balance of Payment समुचित भुगतान शेष

भुगतान शेष की विशेषताँए :-

I क्रमबद्ध लेखा - यह एक देश का अन्य देशों के साथ किए गए आदान - प्रदानों सबंधी भुगतानो व प्राप्तियो का क्रमबद्ध लेखा है।

II निश्चित समय अवधि - यह समय की एक निश्चित अवधि प्राय: एक वर्ष का लेखा - जोखा होता है।

III व्यापकता - इसमे सभी प्रकार के दृश्य, अदृश्य एंव पुंजी अतंरण की मदों को शमिल किया जाता है।

IV दोहरी अकंन प्रणाली - दोहरी लेखा अकंन प्रणाली के आधार पर ही भुगतान व प्राप्तियों को लेखाबद्ध किया जाता है।

V स्व: संतुलित - दोहरी लेखांकन प्रणाली, लेखा दृष्टिकोण से स्वतः ही लेखे को संतुलन मे रखती है।

VI अंतर समायोजन :- वास्तविक व्यवहारों में जब कभी कुल प्राप्तियों व भुगतानों में अंतर हो जाता है, तो इनको समायोजित करने की आवश्यकता पड़ती है।

VII सभी मदें - सरकारी व गैर-सरकारी :-

भुगतान शेष में सरकारी व गैर-सरकारी सभी मदो की प्राप्तियों तथा भुगतानों में साम्मिलित किया जाता है।

भुगतान शेष के अंग – (i) चालू खाता
(ii) पूंजी खाता
(iii) समुचित भुगतान शे.

(1) Current A/C

चालू खाता (Current A/C)

Trade in Goods
- Export of ——
- Import of ——

Trade in Services
- Invisible item
- Teaching, Doctor

Trade in Services
→ व्यापारी उद्यमों द्वारा प्रस्तुत सेवाएँ (Bank)
→ विशेषज्ञों की सेवाएँ (Teacher, Lawyer)
→ यात्राएँ (Travelling expense)
→ यातायात (Vehicles use)
→ निवेश आय (Investment)
→ सरकारी सौदे / खर्चे (जिस देश का office है खर्चा वही देगा)
→ दान या उपहार (Gifts)
→ Mislenius (Newspaper add. Comission / Royality - Book author)

Overall Balance of Payment

शेष

Date / /
Page No.

व्यापार शेष :- व्यापार शेष वस्तुओं के निर्यात और वस्तुओं के आयात के अंतर को स्पष्ट करता है।

व्यापार शेष = वस्तुओं का निर्यात − वस्तुओ का आयात

* Favourable (अनुकूल व्यापार शेष)
  Surplus - बचत का व्यापार शेष

  Export > Import

* Unfavourable (घाटे का / प्रतिकूल व्यापार शेष)
  Deficit in BoT

  Import > Export

* Equilibrium (व्यापार शेष मे संतुलन)

  Import = Export

Date / /
Page No.

(2) पूँजी खाता (capital A/C)

पूँजी खाता वह खाता है जो एक देश के निवासियों एवं शेष संसार के निवासियों के द्वारा किए गए उन सभी लेन-देन से संबंधित है जिनसे किसी देश की सरकार और निवासियों की परिसम्पतियों और दायित्व में परिवर्तन होता है।

Debit	Credit
* Loans Given	* Loans taken
* Investment done in other countries	* Investment done by for foreigners in our County.

* वे सभी पूँजीगत लेन-देन जिनके कारण विदेशी विनिमय का हमारे में inflow होता है, उन्हें BoP के पूँजी खाते में (+ve item) के रूप में लिखा जाता है

* वे सभी पूँजीगत लेन-देन जिनके कारण विदेशी विनिमय का प्रवाह Outflow देश से बाहर को जाता है उन्हे BoP के पूँजी खाते में (-ve item) के रूप में लिखा जाता है।

पूंजी खाते के घटक

I निजी विदेशी ऋण प्रवाह (Private foreign Loans)

+ve item	-ve item
विदेशी निजी ऋण (foreign private Loan)	स्वदेशी निजी ऋणों की वापसी (Repayment of private for Loans

II बैंकिग पूंजी में प्रवाह (Movement of Banking Capital)

+ve item	-ve item
बैंकिग पूंजी का आंतरिक प्रवाह (Inflow of Banking Capital	बैंकिग पूंजी का ब्राह्य प्रवाह (Outflow of Banking Capital)

III सरकारी पूंजी का लेन - देन

+ve item	-ve item
सरकार द्वारा प्राप्त ऋण (Loans taken By Government)	सरकारी क्षेत्रो द्वारा ऋणों की वापसी (Repayment of Loans By Government)

IV स्वर्ण प्रवाह (Gold Movement)

+ ve item	– ve item
स्वर्ण का अंतर्राष्ट्रीय विक्रय (International sale of gold)	स्वर्ण का अंतर्राष्ट्रीय क्रय (International Purchas of gold in the International Market

V विविध (Miscellaneous)

इन सभी मदों (items) के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की पूंजी प्राप्तियों तथा पूंजी का भुगतान यहाँ लिखे जाते है।

(3) Other items of BoP –

* Error and omissions
भूल - चुक

* Official Reserve Transactions –
सरकारी रिजर्व सौदे
↓ 2 parts ↓

(i) भुगतान शेष मे सरकारी रिजर्व मे होने वाली कमी (+ve item) के रूप मे लिखा जाता है क्योंकि उनके विक्रय से विदेशी विनिमय का प्रवाह देश के अंदर होता है।
इसके विपरित सरकार रिजर्व मे वृद्धि को (-ve item) के रूप मे लिखा जाता है।

क्योंकि उनके क्रय से विदेशी विनिमय का प्रवाह देश के बाहर होता है।

(ii) हमारे देश में शेष विश्व की सरकारी परिस्थितयाँ

Autonomons Transaction स्वायत्त सौदे	Accommodating Transaction समायोजक सौदे
(i) भुगतान शेष में स्वायत्त सौदो को 'Above the line item' कहा जाता है।	(i) भुगतान शेष में समायोजक सौदो को 'Below the line item' कहा जाता है।
(ii) इनका सबंध ऐसे सौदो से होता है जो लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से किए जाते हैं।	(ii) इनका सबंध ऐसे सौदो से नहीं होता जो लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से किए जाते है।
(iii) इनका सबंध देश के BoP की अनुकुल या प्रतिकूल स्थिति से नहीं होता।	(iii) इसका सबंध देश के BoP की अनुकूल या प्रतिकूल स्थिति से होता है।
(iv) इनका उद्देश्य BoP में सतुलन स्थापित करना नहीं होता।	(iv) इनका उद्देश्य BoP में संतुलन स्थापित होता है।

भुगतान शेष में असंतुलन

I संतुलित भुगतान शेष :- जब किसी देश की कुल प्राप्तियाँ और कुल देनदारियाँ बराबर होती है तो भुगतान शेष में संतुलन होता है।

संतुलित भुगतान शेष = R - P = 0

II असंतुलित भुगतान शेष :- जब किसी देश की कुल प्राप्तियाँ उसकी देनदारियों के बराबर नहीं होती तो भुगतान शेष में असंतुलन होता है।
भुगतान शेष में असंतुलन 2 प्रकार का हो सकता है।

(i) अनुकुल भुगतान शेष :- जब किसी देश की प्राप्तियाँ उसकी देनदारियों से ज्यादा होती है तो भुगतान शेष अनुकुल होता है।
भुगतान शेष में संतुलन स्थापित करने के लिए या तो विदेशों से सोना प्राप्त करता है या दूसरे देशों अल्पकालीन ऋण देता है।
अनुकुल भुगतान शेष = R - P > 0

(ii) प्रतिकूल भुगतान शेष :- जब किसी देश की देनदारियाँ उसकी प्राप्तियों से ज्यादा होता है तो भुगतान शेष प्रतिकूल होता है।
इसे संतुलित करने के लिए देश को सोना देना पड़ता है या अल्पकालीन

ऋण लेने पड़ते है।
प्रतिकूल भुगतान शेष $= R - P < 0$

भुगतान शेष में असंतुलन के कारण

I प्राकृतिक कारण

II आर्थिक कारण
(i) आर्थिक विकास योजनाएँ
(ii) लागत - कीमत प्रभाव
(iii) चक्रीय उतार - चढ़ाव
(iv) विदेशी विनिमय दर मे परिवर्तन
(v) विदेशी माँग मे कमी
(vi) व्यापार की शर्तों मे परिवर्तन
(vii) प्रदर्शन प्रभाव
(viii) जनसख्या में तीव्र वृद्धि
(ix) विदेशी पूँजी निवेश प्रवाह
(x) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवहार एवं नीतियाँ

III राजनीतिक कारण
(i) दूतावासो का विस्तार एवं रख-रखाव
(ii) राजनीतिक अस्थिरता
(iii) अंतर्राष्ट्रीय संबंध
(iv) देश विभाजन एवं एकीकरण

भुगतान शेष के असंतुलन को ठीक करने के उपाय

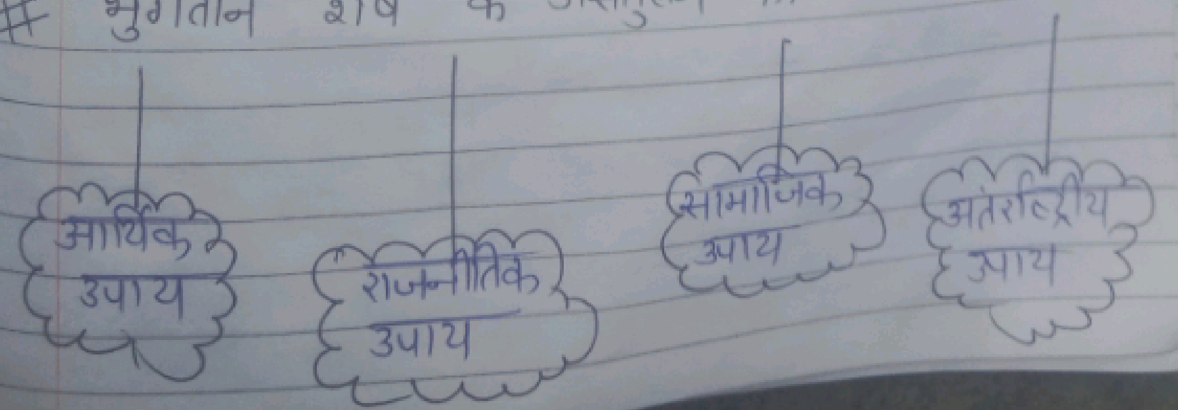

असंतुलन के प्रकार

I चक्रीय असंतुलन
II स्थायी — — —
III संरचनात्मक — — —
IV मौलिक — — —
V अस्थायी — — —

भुगतान शेष का महत्व

I आर्थिक दशा एवं दिशा दर्शक
II आर्थिक परिवर्तनो का मानचित्र
III विदेशी निर्भरता का सूचक
IV विदेशी प्राप्तियो एवं भुगतानो का ज्ञान
V विदेशी निवेश का ज्ञान
VI विदेशी व्यापार का सूचक
VII राष्ट्रीय नियोजन मे सहायक
VIII राष्ट्रीय आर्थिक नीति का निर्धारक
IX अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सस्थाओं के लिए सहायक

अध्याय - 8

विदेशी विनिमय

विदेशी विनिमय दर :- विनिमय दर से अभिप्राय उस दर से है जिस दर पर किसी देश की करेंसी की 1 इकाई को किसी अन्य देश की करेंसी के साथ बदला जाता है।

विदेशी विनिमय बाजार :- विदेशी विनिमय बाजार वे बाजार होते हैं जिनमे एक करेंसी की दूसरी करेंसी मे अदला - बदली होती है।

विदेशी विनिमय बाजार के कार्य

I हस्तांतरण कार्य :- इससे अभिप्राय है कि संसार के विभिन्न देशो में विदेशी विनिमय के रूप में क्रय - शक्ति का हस्तांतरण करना।

II साख कार्य :- इससे अभिप्राय है संसार के विभिन्न देशो मे वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात और आयात के लिए विदेशी विनिमय के रूप मे साख का प्रावधान करना।

III जोखिम से बचाव या पूर्वोपाय कार्य :- विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति का पहले से निर्धारित विनिमय दर पर वचन दे दिया जाता है

चाहे उसका क्रय , विक्रय भविष्य में को भी किया जाए।

विदेशी विनिमय बाजार की कार्य पद्धति

I चालू बाजार :- विदेशी विनिमय से संबंधित चालू बाजार उस बाजार से है जिससे केवल चालू लेन-देन किया जाता है।

II वायदा बाजार :- वायदा बाजार वह बाजार है जिसमे भविष्य में किसी तिथि पर पूरे होने वाले लेन-देन का कारोबार होता है।

- घरेलू करेंसी की मूल्यवृद्धि
  1 \$ = 83 Rs. Value ↑
  1 \$ = 80 Rs.

  । करेंसी के बाहरी मूल्य में वृद्धि को मूल्यवृद्धि कहा जाता है।

- घरेलू करेंसी का मूल्यह्रास
  1 \$ = 83 Rs. Value ↓
  1 \$ = 86 Rs.

  । करेंसी के बाहरी मूल्य में ह्रास को मूल्यह्रास कहा जाता है।

विनिमय दर

स्थिर विनिमय दर | **लचीली विनिमय दर**

- → पक्ष में तर्क
- → विपक्ष मे तर्क

- → पक्ष मे तर्क
- → विपक्ष मे तर्क

संतुलन विनिमय दर का निर्धारण - (113)

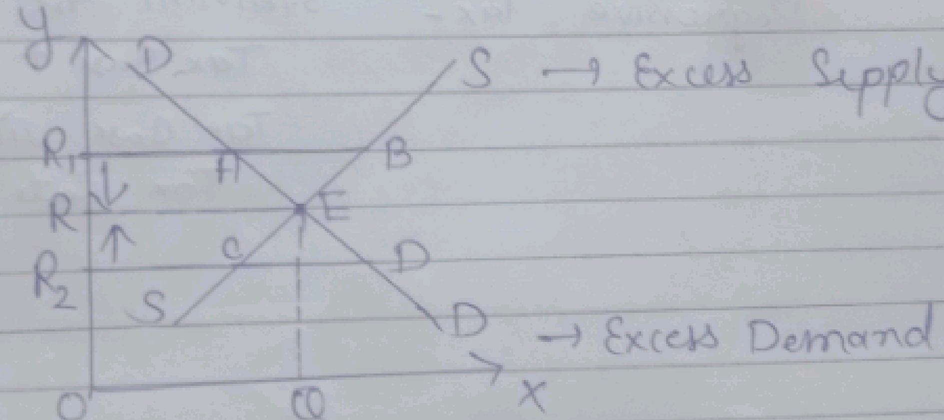

Quantity of foreign Exchange

विनिमय दर को प्रभावित करने वाले तत्व -(115)